

सम्पादकीय

हिंचकोले खाता गठबन्धन

विषयक गठबन्धन के घटक दत्ते ने इस बैठक भी सिटो की नहीं सिटो के बंटवारे की तरीख तय की है। भाजपा आम चुनाव को लेकर जोश खारेश और आम विश्वास के साथ अपने कार्यकर्ता सहित खुद 2024 का माहाल अपने पक्ष में बनाने के लिये मैदान में आ चुकी है। दिसंबर बीतने को हाथ में चुनाव की ओपनिंगों पर चुनाव कार्यक्रम विषयक गठबन्धन अभी भी सिटो के बंटवारे के लिये अगली बैठक के लिये कार्यक्रम रखता है। प्रधानमंत्री के लिये बैठक में ममता बनर्जी और केजरीवाल ने दिलत चेहरे के रूप में कांग्रेस अध्यक्ष खड़ो के नाम को प्रस्तावित किया। विषयकी धारण है कि बिना कांग्रेस को साथ लिये भाजपा को हराया नहीं जा सकता। खड़ो ने कहा है कि वहले चुनाव जीतने लीजिये पर तथा होगा। निश्चय ही सोनिया और राहुल के लिहाज से वह नम्र बने रहे। राहुल का तो किसी ने नाम भी नहीं लिया। खड़ो ने इससे अपना आकान सम्पर्क लिया होगा।

अभी सीटों का बटवारा नहीं पार हालांकि सीटों का बटवारा सबसे ऊपर खारेश है। पर इन्हें को लिये छोपांग की गई है। जनरी से गठबन्धन की रीतियां शुरू होंगी। सुखुक रीतियों में पटना, कोलकाता, नागपुर और चेन्नई को प्राथमिकता देने का निर्णय लिया गया है। गठबन्धन का सीटों के बंटवारे के समय देखें को मिलेगा। कांग्रेस की महत्वाकांक्षा कम नहीं हुई। कई राज्यों में जॉन के बाद वह अपने बोट में किसी को हिस्सा देने का तोंगर नहीं दिख रही है। खासकर हिन्दी क्षेत्र किसी दल की खास दावेदारी न होने का पराया कांग्रेस चाही है और पूरे दम खम के साथ इस क्षेत्र के सीटों पर उत्तरों के लिये तेज़वार है।

सीटों को लेकर गठबन्धन में अभी अपसी टकराव जारी है। जिसका प्रमाण है महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब, बिहार को लेकर संशय है कि कोई बटवारे को लेकर सहमति बन पायेगी। योग्यता इन राज्यों में गठबन्धन दूसरे दल अपनी दावेदारी को लेकर पछें नहीं है। हिमाचल, तेलंगाना और कर्नाटक को लेकर कांग्रेस जॉन में है पर सिर्फ जॉन से काम नहीं चलने वाला है। जॉन के साथ होश हो तभी कामयाबी मिलती है। मोदी और भाजपा के खिलाफ गठबन्धन और कांग्रेस को अपनी छोड़ी तो बना पारे हैं न रख या रहे हैं। कुछ दिनों तक कांग्रेस मोदी के बरबरवास राहुल के खड़ा करने से कोई कोशिश नहीं है। पर राहुल अपने वकालों और कानूनी से अपने को हास्यास्पद बनाने रहे हैं। कभी अपसी विधायी भाषा का प्रयोग प्रधानमंत्री के बाए में कह जाते रहे हैं। जनता उनकी छोड़ी को लेकर गम्भीर नहीं है। पैदल यात्रा से जो थोड़ी बहुत छोड़ी थी वह अब मिट गयी है। मोदी के व्यक्तिक के अगे उनके व्यक्तिक को कोई मुकाबला नहीं है न तो मोदी की सोच से राहुल को कोई मुकाबला हो सकता है। जनता अब राहुल के बहुत हाथों पर ले रही है। बहुत दो बढ़ा बढ़ा मिलिंदों में मोदी के मुकाबले अपना गठबन्धन गहराई से नहीं ले रहा है। ममता के जॉनरीवाल ने राहुल को होड़े से बाहर कर दिया है।

मोदी की अपनी स्टाइल और सोच है जिसका लोहा दुनिया माना है। बड़े देशों के सभी राष्ट्रपति मोदी के मुरीद हैं, अपने देश का सबसे बड़ा अनर उके दे रहे हैं। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में उनकी राय को गम्भीरता से लिया जाता है। दुनिया मानती है शक्तिशाली व्यक्ति में तीन साल से सबसे ऊपर आ रहे हैं। खड़ों को लेकर गठबन्धन की सहमति बन सकती है पर अभी सम्पादन की बात हो रही है। जब सभी एकमत हो किसी का नाम नेतृत्व के लिये आगे करेंगे तो एक से ज्यादा दावेदार अपने को पेश करवा सकते हैं। अपनी सहायता कुछ पूरे पर खले दिख रहे हैं पर जब आविष्यक निर्णय की छोड़ी आयेंगी तो सहमति असहमति में बदलने में देर नहीं लगेंगी।

सदयों के निलम्बन को लेकर अभी गठबन्धन ने खड़ों को आगे कर संयुक्त मोदी के खिलाफिकाला है। पर सहमति सिर्फ असहमति दिखाने का प्रतीकात्मक कदम ही माना जायेगा। दरसल अभी गठबन्धन तय नहीं कर पाया है कि नेतृत्व किस दिया जाय। निश्चित ही वह प्रधानमंत्री बनाने को इच्छुक होगा। पर अभी प्रधानमंत्री का निर्णय चुनाव के बाद लिया जायेगा। कह कर इस मुदे को टाल दिया गया है।

अग्र विषयक मोदी की तुलना में किसी को खड़ा करती है तो पहले तो यही लोग देखेंगे कि वह मोदीका शुक्रमंत्री के प्रभाविता है। खड़ों से सिंजड नेता जरूर है पर सेनियां और राहुल के आगे दब दें रखते हैं पर जब आविष्यक निर्णय की छोड़ी आयेंगी तो सहमति असहमति में बदलने में देर नहीं लगेंगी।

सदयों के निलम्बन को लेकर अभी गठबन्धन ने खड़ों को आगे कर संयुक्त मोदी मोदी के खिलाफिकाला है। पर सहमति सिर्फ असहमति दिखाने का प्रतीकात्मक कदम ही माना जायेगा। दरसल अभी गठबन्धन तय नहीं कर पाया है कि नेतृत्व किस दिया जाय। निश्चित ही वह प्रधानमंत्री बनाने को इच्छुक होगा। पर अभी प्रधानमंत्री का निर्णय चुनाव के बाद लिया जायेगा। कह कर इस मुदे को टाल दिया गया है।

अग्र विषयक मोदी की तुलना में किसी को खड़ा करती है तो पहले तो यही लोग देखेंगे कि वह मोदीका शुक्रमंत्री के प्रभाविता है। खड़ों से सिंजड नेता जरूर है पर सेनियां और राहुल के आगे दब दें रखते हैं पर जब आविष्यक नि�र्णय की छोड़ी आयेंगी तो सहमति असहमति में बदलने में देर नहीं लगेंगी।

सदयों के निलम्बन को लेकर अभी गठबन्धन ने खड़ों को आगे कर संयुक्त मोदी मोदी के खिलाफिकाला है। पर सहमति सिर्फ असहमति दिखाने का प्रतीकात्मक कदम ही माना जायेगा। दरसल अभी गठबन्धन तय नहीं कर पाया है कि नेतृत्व किस दिया जाय। निश्चित ही वह प्रधानमंत्री बनाने को इच्छुक होगा। पर अभी प्रधानमंत्री का निर्णय चुनाव के बाद लिया जायेगा। कह कर इस मुदे को टाल दिया गया है।

अग्र विषयक मोदी की तुलना में किसी को खड़ा करती है तो पहले तो यही लोग देखेंगे कि वह मोदीका शुक्रमंत्री के प्रभाविता है। खड़ों से सिंजड नेता जरूर है पर सेनियां और राहुल के आगे दब दें रखते हैं पर जब आविष्यक नि�र्णय की छोड़ी आयेंगी तो सहमति असहमति में बदलने में देर नहीं लगेंगी।

सदयों के निलम्बन को लेकर अभी गठबन्धन ने खड़ों को आगे कर संयुक्त मोदी मोदी के खिलाफिकाला है। पर सहमति सिर्फ असहमति दिखाने का प्रतीकात्मक कदम ही माना जायेगा। दरसल अभी गठबन्धन तय नहीं कर पाया है कि नेतृत्व किस दिया जाय। निश्चित ही वह प्रधानमंत्री बनाने को इच्छुक होगा। पर अभी प्रधानमंत्री का निर्णय चुनाव के बाद लिया जायेगा। कह कर इस मुदे को टाल दिया गया है।

अग्र विषयक मोदी की तुलना में किसी को खड़ा करती है तो पहले तो यही लोग देखेंगे कि वह मोदीका शुक्रमंत्री के प्रभाविता है। खड़ों से सिंजड नेता जरूर है पर सेनियां और राहुल के आगे दब दें रखते हैं पर जब आविष्यक नि�र्णय की छोड़ी आयेंगी तो सहमति असहमति में बदलने में देर नहीं लगेंगी।

सदयों के निलम्बन को लेकर अभी गठबन्धन ने खड़ों को आगे कर संयुक्त मोदी मोदी के खिलाफिकाला है। पर सहमति सिर्फ असहमति दिखाने का प्रतीकात्मक कदम ही माना जायेगा। दरसल अभी गठबन्धन तय नहीं कर पाया है कि नेतृत्व किस दिया जाय। निश्चित ही वह प्रधानमंत्री बनाने को इच्छुक होगा। पर अभी प्रधानमंत्री का निर्णय चुनाव के बाद लिया जायेगा। कह कर इस मुदे को टाल दिया गया है।

अग्र विषयक मोदी की तुलना में किसी को खड़ा करती है तो पहले तो यही लोग देखेंगे कि वह मोदीका शुक्रमंत्री के प्रभाविता है। खड़ों से सिंजड नेता जरूर है पर सेनियां और राहुल के आगे दब दें रखते हैं पर जब आविष्यक निर्णय की छोड़ी आयेंगी तो सहमति असहमति में बदलने में देर नहीं लगेंगी।

सदयों के निलम्बन को लेकर अभी गठबन्धन ने खड़ों को आगे कर संयुक्त मोदी मोदी के खिलाफिकाला है। पर सहमति सिर्फ असहमति दिखाने का प्रतीकात्मक कदम ही माना जायेगा। दरसल अभी गठबन्धन तय नहीं कर पाया है कि नेतृत्व किस दिया जाय। निश्चित ही वह प्रधानमंत्री बनाने को इच्छुक होगा। पर अभी प्रधानमंत्री का निर्णय चुनाव के बाद लिया जायेगा। कह कर इस मुदे को टाल दिया गया है।

अग्र विषयक मोदी की तुलना में किसी को खड़ा करती है तो पहले तो यही लोग देखेंगे कि वह मोदीका शुक्रमंत्री के प्रभाविता है। खड़ों से सिंजड नेता जरूर है पर सेनियां और राहुल के आगे दब दें रखते हैं पर जब आविष्यक नि�र्णय की छोड़ी आयेंगी तो सहमति असहमति में बदलने में देर नहीं लगेंगी।

सदयों के निलम्बन को लेकर अभी गठबन्धन ने खड़ों को आगे कर संयुक्त मोदी मोदी के खिलाफिकाला है। पर सहमति सिर्फ असहमति दिखाने का प्रतीकात्मक कदम ही माना जायेगा। दरसल अभी गठबन्धन तय नहीं कर पाया है कि नेतृत्व किस दिया जाय। निश्चित ही वह प्रधानमंत्री बनाने को इच्छुक होगा। पर अभी प्रधानमंत्री का निर्णय चुनाव के बाद लिया जायेगा। कह कर इस मुदे को टाल दिया गया है।

अग्र विषयक मोदी की तुलना में किसी को खड़ा करती है तो पहले तो यही लोग देखेंगे कि वह मोदीका शुक्रमंत्री के प्रभाविता है। खड़ों से सिंजड नेता जरूर है पर सेनियां और राहुल के आगे दब दें रखते हैं पर जब आविष्यक निर्णय की छोड़ी आयेंगी तो सहमति असहमति में बदलने में देर नहीं लगेंगी।

सदयों के निलम्बन को लेकर अभी गठबन्धन ने खड़ों को आगे कर संयुक्त मोदी मोदी के खिलाफिकाला है। पर सहमति सिर्फ असहमति दिखाने का प्रतीकात्मक कदम ही माना जायेगा। दरसल अभी गठबन्धन तय नहीं कर पाया है कि

